Newspaper : Denik Jagran

Edition: Dehradun| Date: 27th March, 2019 | Pg: 02

अब स्कूलों में 'खुशियों की पाठशाला'

दिल्ली, हिमाचल व गुजरात के कार्यक्रम शैक्षिक परिस्थितियों के अनुरूप यहां होंगे लागू

जागरण संवाददाता, देहरादून: प्रदेश के सरकारी स्कूलों में बच्चों को अब एक और कोर्स पढ़ाया जाएगा। वे कोर्स बच्चों के लिए टेंशन नहीं बल्कि उनके चेहरों पर मुस्कान लेकर आएगा। जी हां, दिल्ली की तर्ज पर उत्तराखंड में भी बच्चों को खुश रखने के लिए 'हैप्पीनेस करिकुलम' की शुरुआत की जाएगी। इसके अलावा गुजरात का गुणोत्सव और उदे गुजरात, हिमाचल का अखंड शिक्षा ज्योति, मेरे स्कूल से निकले मोती व छात्र संप्रीति का ऑनलाइन अनुश्रवण जैसे कार्यक्रम भी वहां की शैक्षिक परिस्थितियों के अनुरूप लागू किए जाएंगे।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) की ओर से 'विद्यालयी शिक्षा में गुणवत्ता' विषय पर आधारित राष्ट्रीय सेमीनार मंगलवार को संपन्न हो गया। समापन सत्र में निदेशक अकादमिक शोध एवं प्रशिक्षण सीमा जौनसारी ने कहा कि दिल्ली, गुजरात व हिमाचल प्रदेश द्वारा साझा किए नवाचारी प्रयासों का विश्लेषण कर राज्य की शैक्षिक परिस्थितियों के अनुरूप उन्हें लागू किया जाएगा। अपर निदेशक एससीईआरटी अजय कुमार नौडियाल ने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता के लिए समुदाय के साथ मिलकर कार्य करना होगा। दूसरे दिन के प्रथम सत्र में अजीम प्रेमजी फाउंडेशन ने नवाचारी कार्यक्रम विषय पर प्रस्तुतिकरण दिया। एससीईआरटी की संयुक्त निदेशक कंचन देवरड़ी ने पैनल विशेषज्ञों का परिचय देते हुए शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे नवाचारी प्रयासों की रूपरेखा प्रस्तुत की। अजीम प्रेमजी फाउंडेशन बंगलुरु के एसोसिएट प्रोफेसर बीएस ऋषिकेश ने संगठन द्वारा किए जा रहे क्रियाकलापों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वॉलंटरी टीचर्स फोरम में शिक्षक अवकाश के समय भी स्वेच्छा से विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते हैं। फाउंडेशन के विशेषज्ञ अंबरीश बिष्ट ने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता के लिए प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों को प्रशिक्षण क्षेत्र के लिए स्वायत्तता दी जानी जरूरी है। अपर निदेशक प्रारंभिक शिक्षा बीरेंद्र सिंह रावत ने कहा कि गुणवत्ता के लिए हमें सभी कारकों पर ध्यान देना होगा। नवाचार की अवधारणा को किया स्पष्ट: अंतिम सत्र में डायट और एससीईआरटी स्तर पर किए जा रहे नवाचारी प्रयासों पर संकाय सदस्यों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। एससीईआरटी के उप निदेशक डॉ. एसपी सिंह ने शिक्षा में नवाचार की अवधारणा को स्पष्ट किया।

हिमाचल का मॉडल बुलाया

द्वितीय सत्र में स्टेट लीडर अकादमी के प्राचार्य डॉ. देशराज चौहान ने कहा कि शिक्षण की गुणवत्ता के लिए शैक्षिक प्रवासों में निरंतरता जरूरी है। उन्होंने बताया कि हिमाचल प्रदेश में पूर्व प्राथमिक कक्षाएं भी संचालित की जा रही हैं। अखंड शिक्षा ज्योति, मेरे स्कूल से निकले मोती व टीचर्स एप के विषय में भी उन्होंने जानकारी दी। बताया कि स्कूल लीडरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम के तहत प्रत्येक प्रधानाध्यापक का क्षमता विकास किया जा रहा है। एससीईआरटी के संयुक्त निदेशक कुलदीप गैरोला ने कहा कि हिमाचल व उत्तराखंड के बीच काफी समानताएं हैं। इसलिए हिमाचल प्रदेश द्वारा प्रस्तुत नवाचारी कार्यक्रम उत्तराखंड के लिए भी उपयोगी सिद्ध होंगे।